# मेरा पालनहार अल्लाह है

هندي

**अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषता जानने का महत्व**

www.with-allah.com

www.with-allah.com/hi

मुहम्मद बिन सर्रार अलयामी
डाक्टर अब्दुल्लाह बिन सालिम बा हम्माम

https://www.with-allah.com/hi

# अल्लाह तआला को उस के नामों और उस की विशेषताओं से पहचानो

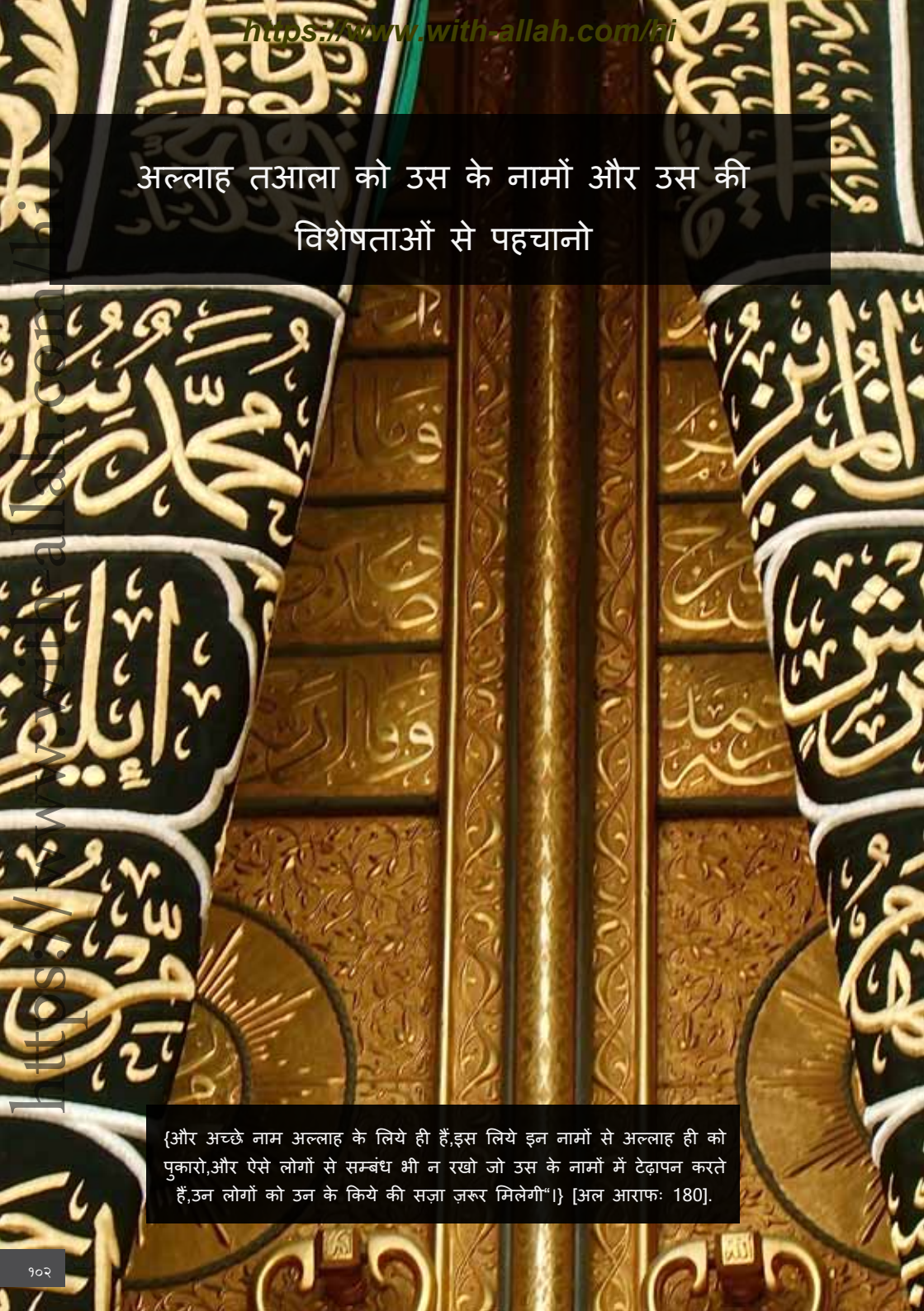

{और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं,इस लिये इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो,और ऐसे लोगों से सम्बंध भी न रखो जो उस के नामों में टेढ़ापन करते हैं,उन लोगों को उन के किये की सज़ा ज़रूर मिलेगी"।} [अल आराफः 180].

https://www.with-allah.com/hi

# तीसरी बातः अल्लाह तआला को उस के नामों और उस की विशेषताओं से पहचानोः

## और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं,इस लिये:

अल्लाह तआला ने फरमायाः {और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं,इस लिये इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो,और ऐसे लोगों से सम्बंध भी न रखो जो उस के नामों में टेढ़ापन करते हैं,उन लोगों को उन के किये की सज़ा ज़रूर मिलेगी"।}[अल आराफः 180].

## क- और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं इस का अर्थः

अल्लाह तआला के संपूर्ण नाम प्रशंसा पर आधारित हैं और अल्लह तआला ने अपने इन सारे नामों के विषय में कहा कि यह सब अच्छे हैं,फरमायाः {और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं,इस लिये इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो,और ऐसे लोगों से सम्बंध भी न रखो जो उस के नामों में टेढ़ापन करते हैं,उन लोगों को उन के किये की सज़ा ज़रूर मिलेगी"।} [अल आराफः 180].

यह नाम केवल शब्दों के आधार पर अच्छे नहीं हैं बल्कि इस लिये भी अच्छे हैं क्योंकि यह सब नाम विशेषताओं पर आधारित हैं; अल्लाह तआला के सभी नामों में प्रशंसा तारीफ,बड़ाई और बुजुर्गी के अर्थ पाये जाते हैं,इसी लिये यह अच्छे हैं,अल्लाह तआला के संपूर्ण गुणों में विशेषतायें और प्रताप

http://www.with-allah.com/hi

https://www.with-allah.com/hi

(जलाल) एवं महनता (बुज़ुर्गी) पाई जाती है और उस के संपूर्ण कार्य हिक्मत,दया विधि और न्याय पर आधारित हैं।

ईमान में से है कि अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं पर उसी प्रकार ईमान लाया जाये जिस प्रकार उन के विषय में क़ुरआन और सही हदीस में आया है,परन्तु इस ईमान के आधार दो नियमों पर निर्धारित हैं:

पहला नियमः

बिना किसी परिवर्तन,अनध्याय,उपमा या कैफियत बयानी के अल्लाह तआला के नामों को उस की महिमा अनुसार साबित किया जाये ताकि अल्लाह के इस फरमान पर अमल हो जायेः {उस जैसी कोई चीज़ नहीं,और वह सुनने वाला देखने वाला है"।}[अश्शूराः 11].

दूसरा नियमः

उन नामों के अर्थ को समझा जाये और दशा तलाश किये बिन उन गुणों को साबित किया जाये जो इन नामों में पाये जाते हैंएअल्लाह तआला ने फरमायाः {जो कुछ उन के आगे और पीछे है उसे जानता है,मखलूक़ का इल्म उसे घेर नहीं सकता"।}[ताहाः 110].

अल्लाह तआला ने अच्छे अच्छे नामों और उस की महान विशेषताओं से अपनी हस्ती का अपने बंदों के सामने परिचय करवाने का कारण बताया है और वह अल्लाह तआला की इबादत है जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमायाः {कह दीजिये कि अल्लाह को अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान कह कर जिस नाम से भी पुकारो सभी अच्छे नाम उसी के हैं"।}[अल इस्राः 110].

और अल्लाह तआला ने फरमायाः {और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं,इस लिये इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो,और ऐसे लोगों से सम्बंध भी न रखो जो उस के नामों में टेढ़ापन करते हैं,उन लोगों को उन के किये की सज़ा ज़रूर मिलेगी"।}[अल आराफः 180].

## ख- " इस लिये इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो " इस का अर्थः

अल्लाह तआला के अच्छे अच्छे नामों से दुआ माँगना दो प्रकार की दुआ को शामिल हैः(पहली दुआ) माँगने के लिये दुआ करना जैसे बंदे का यह कहना " ऐ अल्लाह मुझे दे,ऐ दयालू मुझ पर दया कर,ऐ दानशील मुझ पर कृपा कर " (दूसरी दुआ) प्रशंसा और बंदगी बयान करने के लिये दुआ करना जैसे बिना किसी आवश्यक्ता के अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के ज़रिये उस की बड़ाई

https://www.with-allah.com/hi

बयान करनाएऔर अच्छे अच्छे नाम और अच्छी विशेषताओं वाली महान और बड़ी हस्ती की यह प्रशंसा दिल और जुबान दोनों से होती है-

## ग- "और ऐसे लोगों से सम्बंध भी न रखो जो उस के नामों में टेढ़ापन करते हैं" इस का अर्थः

अल्लाह तआला के नामों में इल्हाद का अर्थः यह है कि अल्लाह की किताब में बयान हुयी किसी चीज़ का झुटलाना,उसे नकारना,या अल्लाह तआला के नामों में से किसी नाम का मखलूक़ समान मानना या अल्लाह तआला को ऐसी विशेषता या ऐसे नाम से याद करना जो उस की महानता के योग्य न हो अथवा कुरआन एवं हदीस में उस की कोई दलील भी न हो।

## अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषता जानने का महत्वः

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषता जानने का  महत्व निम्न लिखित बातों से ज़ाहिर होता हैः

पहली बातः

संपूर्ण ज्ञानों में अधिकतर प्रतिष्ठत वह ज्ञान है जिस का तअल्लुक़ अल्लाह की ज़ात और उस के नामों और उस की विशेषताओं से हो,और बंदे की जानकारी अनुसार

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के विषय में उस के भीतर अपने रब की बंदगी,उस से प्रेम,लगाव और उस की महानता उस का नसीब बन जाती है जो अल्लाह तआला की प्रसन्नता,उस के स्वर्ग की प्राप्ति और प्रलोक में अल्लाह के दीदार की निधि के हासिल होने का कारण होती है,और यह उद्देश्य अल्लाह की कृपा के बिना कदापि प्राप्ति नहीं हो सकता है।

दूसरी बातः

अल्लाह तआला के नामों और और उस की विशेषताओं का ज्ञान, मूल ज्ञान और ईमान की जड़ और पहला फर्ज़ है; क्योंकि जब लोग अल्लाह तआला को अच्छे प्रकार से जान लेंगे तो वह सही ढंग से उस की इबादत भी करेंगे,अल्लाह तआला ने फरमायाः {तो जान लो कि अल्लाह के सिवा काई उपास्य नहीं"।}[मुहम्मदः 19].

https://www.with-allah.com/hi

तीसरी बातः

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के ज्ञान से ईमान और विश्वास में बढ़ोतरी होती है,तौहीद प्रमाणित होती है और बंदगी का मज़ा मिलता है,और यही ईमान की रूह,उस की जड़ और उस का उद्देश्य है, और इस का सरल मार्ग कुरआने करीम में मौजूद अल्लाह तआला के नामों और और उस की विशेषताओं में गौरो फिक्र करना है,अल्लाह तआला जब किसी बंदे को अपनी परिचय और उस के दिल में अपना प्रेम डालना चाहता है तो अपनी महान विशेषताओं को स्वीकार करने और वह्य के ताक़ से उसे प्राप्त करने के लिये उस के दिल को खोल देता है,फिर जब भी बंदे के सामने अल्लाह तआला की विशेषताओं में से कोई चीज़ आती है तो वह उसे क़बूल करता है,उस पर प्रसन्नता प्रकट करता है और स्वीकारता है और अधीनता के साथ उस पर विश्वास रखता है तो इस कारण उस का दिल रोशन हो जाता है।

किसी भी ज्ञान का महत्व उस ज्ञान से प्राप्ति होने वाली चीज़ों के महत्व पर आधारित होती है,और अल्लाह तआला,उस के नामों और उस की विशेषताओं के ज्ञान से बढ़ कर कोई ज्ञान नहीं ह

बंदे का सीना चैड़ा हो जाता है,प्रेम और प्रसन्नता से भर जाता है,फिर उस की खुशी बढ़ जाती है,उस की बेनियाज़ी अधिक हो जाती है,अल्लाह का परिचय मज़बूत हो जाता है,उस की रूह को संतुष्टि मिलती है और उस के दिल में शान्ति पैदा होती है,फिर वह उस ज्ञान के साथ उस के मैदानों में घूमता फिरता है,और ज्ञान के बगैचों में अपनी ज्ञानचक्षु (बसीरत) वाली आंख से देखता है,क्योंकि उस का विश्वास है कि किसी भी ज्ञान का महत्व उस ज्ञान से प्राप्ति होने वाली चीज़ों के महत्व पर आधारित होता है,और इस जैसी विशैषताओं वाली हस्ती से अधिक कोई भी प्राप्ति किया जाने वाला ज्ञान महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ नहीं है,और वह हस्ती अल्लाह तआला की हस्ती है जिस के प्यारे प्यारे नाम और प्रमुख विशेषतायें हैं,और ज्ञान का महत्व उस की आवश्यक्ता अनुसार होता है,और रूह को अपने पैदा करने वाले का ज्ञान,उस की मुहब्बत,उसे याद करना,अल्लाह को याद करेने से मिलने वाली खुशी,अल्लाह तआला से वसीला मांगने और उस के दरबार से निकटता प्राप्त करने से अधिक कभी किसी महान चीज़ की आवश्यक्ता नहीं होती है,और उस आवश्यक्ता को पूरा करने का केवल एक ही मार्ग है और वह मार्ग अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान है,बंदा जिस प्रकार अल्लाह

https://www.with-allah.com/hi

https://www.with-allah.com/hi

अल्लाह तआला की हस्ती,उस के नामों और उस की विशेषताओं के ज्ञान में दिल के सुधार और ईमान की पुर्ति है.

तआला के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान रखता है उसी प्रकार अल्लाह तआला के विषय में जानकारी प्राप्त होती है,उसी प्रकार वह अल्लाह का इच्छुक रहता है, उस के निकट आता है,और बंदा जिस प्रकार उन नामों और उस की विशेषताओं को नकारता है उसी प्रकार वह अल्लाह की हस्ती से नावाक़िफ, उस को नापसंद करने वाला,और उस से दूर होगा,बंदा जिस प्रकार अपने दिल में अल्लाह तआला को जगह देता है उसी प्रकार अल्लाह तआला भी उस को अपने निकट जगह देता है।

चैथी बातः

अल्लाह तआला की हस्ती का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति अल्लाह के नामों और उस की विशेषताओं के विषय में जानकारी को अल्लाह तआला के संपूर्ण कार्यों और निर्णायकों के लिये सबूत बनाता है; क्योंकि अल्लाह तआला वही करता है जो उस के नामों और उस की विशेषताओं के अनुसार होते हैं और उस के कार्य हिक्मत,न्याय और एहसान पर आधारित होते हैं,और अल्ला तआला जो भी निर्णय लेते हैं वह उस की बड़ाई हिक्मत और एहसान अनुसार होते हैं,इसी लिये अल्लाह की ओर से आने वाली सभी बातें सत्य और सही हैं और उस की ओर से मिलने वाले सभी निर्णायक न्याय,हिक्मत और दया पर आधारित हैं,अल्लाह के नामों और उस की विशेषताओं का यह ज्ञान महान है और अधिक स्पष्ट होने के कारण इस पर चेतावनी की कोई आवश्यक्ता भी नहीं है।

पाँचवीं बातः

अल्लाह तआला की विशेषताओं और उन के नोदनों (तक़ाज़ों) में शामिल होने वाली सब ज़ाहिरी और छुपी इबादतों के बीच एक गहरा तअल्लुक़ है,क्योंकि हर विशेषता के लिये एक विशेष बंदगी है जो उस के तक़ाज़ों में शुमार होती है,दिली तौर पर और शारीरिक तौर पर की जाने वाली संपूर्ण इबादतों में यह बात आम है; इस लिये जब बंदे को इस बात का विश्वास हो जाये कि केवल अल्लाह ही लाभ और हानि का मालिक है,वही देने और छीनने की क्षमता रखता है,वही जीविका देता है,वही पैदा करता है, वही मौत और जीवन का मालिक है,तो इस विश्वास से छुपे तौर पर बंदे के भीतर भरोसे की बंदगी पैदा होती है,और ज़ाहिरी तौर से अल्लाह पर भरोसे के प्रभाव ज़ाहिर होते हैं,बंदे का अल्लाह तआला के सुनने और देखने की शक्ति का ज्ञान रखना और इस बात का विश्वास रखना कि अल्लाह तआला से संसार की छोटी सी छोटी चीज़ भी छुपी नहीं है,वह हर ढकी छुपी चीज़ को जानता है,वह आंखों और सीनों में छुपी हुयी चीज़ों को जानता है,तो इस ज्ञान के कारण बंदे में हर उस चीज़ से बचने का जज़बा पैदा होता है जिस से अल्लाह तआला क्रोधित होता है,फिर वह अपने अंगों उन चीज़ों से जोड़े रखता है जो अल्लाह तआला को प्रसन्न करते हैं जिस कारण

बंदे में छुपे तौर पर लज्जा की स्थिति (कैफियत) पैदा हो जाती है,और लज्जा बंदे को बुराइयों और हराम चीज़ों से दूर रखती है,जब बंदे को अल्लाह तआला की बेनियाज़ी,दानशीलता,पुरस्कार देने की क्षमता और उस की दया का ज्ञान होता है तो उस से बंदे की आशा बढ़ जाती है,इसी प्रकार जब बंदे को अल्लाह तआला के प्रताप,उस की महानता,उस के सम्मान का ज्ञान होता है तो इस से बंदे के भीतर नम्रता और विनम्रता और प्रेम आता है,फिर यह सब छुपी स्थितियां अपने अपने तक़ाज़ों के अनुसार बंदे में ज़ाहिरी बंदगी के अनेक तरीक़े पैदा करती हैं .. इस का तत्व यह निकला कि बंदगी का आधार अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के तक़ाज़ों पर आधारित हैं।

छटवीं बातः

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं की इबादत में दिलों और उस के स्वभाव एवं आचार की सुरक्षा है,जब कि इस का उलटा करने में अर्थात अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं को छोड़ देने में रूहानी बीमारियों का द्वार खोलना है।

सातवीं बातः

जब बंदा किसी मुसीबत, घृणित कामों और कष्ट में पड़ जाता है तो अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान बंदे की सांत्वना का सामान बनता है,क्योंकि जब बंदे को इस बात पर विश्वास हो कि उस का रब अधिक जानने वाला,हिक्मत वाला,और न्याय करने वाला है जो किसी ऐसे व्यक्ति के साथ अन्याय नहीं करता जो उस के निर्णय से प्रसन्न हो और धैर्य करने वाला हो और बंदे में यह यक़ीन हो कि उस को पहुंचने वाली सभी मुसीबतों और सब परीक्षाओं में अनेक रूचियाँ और लाभ हैं जिन का जानना उस के बस से बाहर है,परन्तु अल्लाह तआला की हिक्मत और उस के ज्ञान का तक़ाज़ा यही है,तो इस विश्वास से बंदे को शांति मिलती है,अपने रब के निर्णय से वह प्रसन्न रहता है अपने सभी मामलों को अल्लाह के हवाले कर देता है।

आठवीं बातः

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का समझना, अल्लाह तआला की मुहब्बत,उस की महानता,उस की हस्ती से आशा करने, उस से डरने, उस पर भरोसा करने,सदा उसे हाज़िर व नाज़िर समझने और इस के अतिरिक्त बहुत सी विशेषतायें बंदे में पैदा करने का कारण हैं जो अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं की ज्ञान के फल हैं।

नौवीं बातः

निःसंदेह अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के अर्थ में विचार करना,अल्लाह तआला की किताब कुरआन में विचार करने पर सहायक है; और अल्लाह तआला ने हमें अपने कुरआन में विचार करने का आदेश दिया है,अल्लाह तआला ने फरमायाः {यह मुबारक किताब है जिसे हम ने आप की ओर इस लिये उतारा है कि लोग इस की आयतों पर ध्यान दें और ख्याल करें और अक्लमंद इस से नसीहत हासिल करें"।}[सादः 29].

और चूंकि कुरआने करीम में अधिकतर अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के विषय में उचित जगहों पर ज़िक्र आया है, इस लिये उन नामों और विशेषताओं में विचार करने से कुरआने करीम के भीतर गौरो फिक्र करने का एक बड़ा द्वार खुल जाता है,जब आप कुरआने करीम में विचार करेंगे तो कुरआन आप को आसमानों के ऊपर अर्श पर बैठे हुये ऐसे बादशाह और क़ायम करने वाली हस्ती को देखेंगे जो

https://www.with-allah.com/hi

https://www.with-allah.com/hi

अपने बंदों के मामलात चलाता है,उन्हें आदेश देता है और मना करता है,संदेष्टाओं को भेजता है,किताबें उतारता है,प्रसन्न होता है और क्रोधित भी,सवाब और अज़ाब देने की शक्ति रखता है,देता भी है और छीन भी लेता है,सम्मान देता है और ज़लील भी करता है,ऊँचा उठाता है और नीचे भी फेंक देता है,सातों आकाश के ऊपर से देखता और सुनता है हर ढकी और खुली चीज़ को जानता है,जो चाहता करता है,उस में हर विशेषता और हर प्रकार के गुण हैं,हर दोष से पाक है,कोई कण उस की अनुमति बिना हरकत नहीं करता,और कोई पता भी नहीं गिरता मगर अल्लाह उसे जानता है,निःसंदह वह हस्ती अधिक ज्ञान और हिक्मत वाली है।

जिस ने अल्लाह तआला को पालिया उस ने क्या खोया?!और जिस ने अल्लाह को खो दिया उस ने क्या पाया?!

दस्वीं बातः

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान दिल में अल्लाह तआला का अदब,सम्मान और उस से लज्जा करने पर उभारता है,अल्लाह तआला के अदब और सम्मान का अर्थ यह है कि उस के दीन पर जमने के साथ साथ अमल किया जाये,और ज़ाहिरी एवं छुपे तौर पर उस दीन के आदाब को बजा लाया जाये,और अल्लाह तआला का अदब एवं सम्मान तीन चीज़ों के बिना पैदा हो ही नहीं सकता हैः एक अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान हो,दूसरी चीज़ उस के दीन और शरीअत अथवा उस की प्रिय और अप्रिय चीज़ों का ज्ञान हो,तीसरी चीज़ ज्ञान और कर्म अनुसार तथा तुरंत सत्य को स्वीकारने वाला कोमल दिल हो।

ग्यारहवीं बातः

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान बंदे को अपने नफ्स की बुराइयों और उस में पायी जाने वाली कमी से खबरदार रखती है,फिर बंदा अपने नफ्स के सुधारने में जुट जाता है,याद रहे कि इन्कार और हटधर्मी के चार कारण हैंः घमंड,ईष्र्या,क्रोध और वासना(हविस) और चारों चीज़ों के पैदा होने का कारण बंदे की अपने रब से और स्वयं अपने आप से दूरी हो जाती है,और जब बंदा अपने रब की विशेषताओं की पूर्णता और उस के गुणों की महानता को जान लेता है और अपने नफ्स में पाई जाने वाली कोताहियों और बुराइयों को पहचान लेता है फिर न तो वह घमंड करता है और न क्रोध और न ही अल्लाह तआला की ओर से अपने किसी भाई को मिली हुयी नेमत पर डाह करता है।

बारहवीं बातः

बंदे का अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का न तो ज्ञान रखना और न ही उसे समझना और उन विशेषताओं की बुनियाद पर उस की बंदगी न करना गुमराही और जहालत का कारण

है,जिस व्यक्ति ने अल्लाह और उस के रसूल को न पहचाना उस ने फिर क्या जाना? जिस व्यक्ति को अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं की (वास्तविक्ता) हक़ीक़त का ज्ञान न हो तो उसे किस चीज़ की हक़ीक़त का ज्ञान होगा? और जिस व्यक्ति को अल्लाह तआला की हस्ती,उस की मरज़ी और चाहत अनुसार अमल,उस के दरबार के निकट करने वाले मार्गों और अल्लाह तआला के दरबार तक पहुंचने के बाद उस को मिलने वाली नेमतों का ज्ञान न हो तो फिर उसे कौन से ज्ञान और अमल वाला समझा जायेगा? निःसंदेह मानव जीवन उस की रूह व दिल के जीवित होने पर निर्भर है,और दिल उसी समय जीवित रह सकता है जब उसे अपने पैदा करने वाले का ज्ञान और उस से प्रेम हो,उसी की इबादत में वह लगा हो,उसी के समीप विलाप करता हो,उसी की याद से उस को सुकून प्राप्त होता हो,और उसी की निकटता से उस को प्रेम हो,जिस व्यक्ति को इस जैसा जीवन प्राप्त न हो वास्तविकता में वह हर प्रकार की भलाई से वंचित (महूम) है? चाहे उस के बदले दुनिया के संपूर्ण सुख उसे प्राप्त हो जायें।

तेरहवीं बातः

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान एकेश्वरवाद के विशुद्व करने और ईमान की पूर्णता का कारण है,इसी ज्ञान से दिल के कार्य जैसे निश्छलता,प्रेम,उम्मीद,डर और एक हस्ती पर भरोसा करने का जज़्बा पैदा होता है, अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के ज्ञान की ओर ध्यान,और उस में विचार एक छोटा सा कार्य है परन्तु दिलों को सुधारने और वस्वसों एवं आफतों से दिलों को पाक रखने में इस का बहुत बड़ा रोल है,जो व्यकित शरीअत के उसूल व ज़वाबित में विचार करेगा तो उसे यह ज्ञान हो जायेगा कि अंगों के कार्य दिलों के कार्य से जुड़े हुये हैं और अंगों के कार्य दिलों के कार्य के बिना लाभदायक नहीं हो सकते,अथवा उसे यह भी पता चल जायेगा कि अंगों के कार्य से अधिक महत्व दिलों के कार्यों की है,क्या मोमिन और मुनाफिक़ के बीच केवल इसी बात से फर्क़ नहीं किया जाता है कि इन दोनों के दिलों में क्या क्या चीज़ें छुपी हुयी हैं,जो इन दोनों को एक दूसरे से अलग करते हैं? और क्या किसी भी मनुष्य के लिये अंगों के कार्य से पहले दिल के कार्य के ज़रिये इस्लाम में परवेश करने के अतिरिक्त कोई और मार्ग है? जो दिल की बंदगी से अधिक महान व महत्वपुर्ण और सदा बाक़ी रहने वाला है,और यही बंदगी अंगो से होने वाले कार्यों का रास्ता है,इसी लिये दिल की बंदगी हर समय अनिवार्य है।

अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के समझने के विषय में नियम एवं चेतावनीः

अल्लाह तआला के ज्ञान में दिलों और जिस्मों का सुधार है।

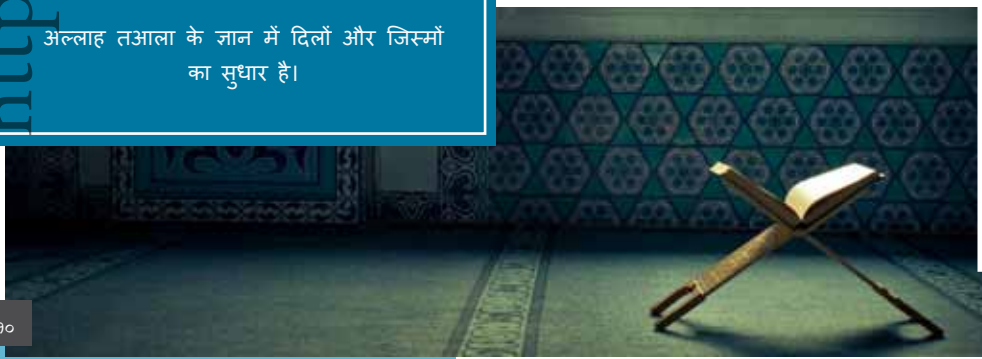

https://www.with-allah.com/hi

http://www.with-allah.com/hi

https://www.with-allah.com/hi

# अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के समझने के विषय में नियम एवं चेतावनीः

"उस जैसी कोई चीज़ नहीं,और वह सुनने वाला देखने वाला है"। [अश्शूराः 11].

https://www.with-allah.com/hi

1- बेशक अल्लाह तआला के सब नाम अच्छे हैं,अल्लाह तआला ने फरमायाः {और अच्छे नाम अल्लाह के लिये ही हैं"।}[अल आराफः 180].

vYykg rvkyk dks ge us ml dh cqyan t+ात से पहचाना ताकि हम उस की इबादत करें,उसे महान समझें,उस से प्रेम करें,उस से डरें और उस से उम्मीद बाँधें।

2- अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के प्रमाण के दो स्रोत (मसदर) हैं तीसरा कोई नहीं,और वह अल्लाह की किताब और उस के रसूल की सुन्नत है,अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का प्रमाण इन दोनों के सिवा किसी और मसदर से नहीं हो सकता,हम वही साबित करेंगे जिसे अल्लाह और उस के रसूल ﷺ ने साबित किया है, इसी प्रकार उस के विपरित की पूर्णता को हम साबित करेंगे,और जिस के सबूत और इन्कार के विषय में कोई चीज़ नहीं आई है उस में चुप रहना अनिवार्य है,इस लिये कि प्रमाण न होने के कारण किसी चीज़ का सबूत नहीं होगा और इन्कार न आने के कारण किसी चीज़ को नकारा नहीं जायेगा,हाँ अर्थ के विषय में विस्तार (तफ्सील) है,अगर उस से हक़ का इरादा किया गया जो अल्लाह तआला के योग्य है तो स्वीकार्य है,और अगर उस से ऐसे अर्थ का इरादा किया गया जो अल्लाह तआला के योग्य नहीं है तो उस का अस्वीकार्य अनिवार्य है।

3- अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं में कलाम करना उस की ज़ात में कलाम करने की तरह है,जिस प्रकार हम पविन्न ज़ात की कैफियत नहीं जान सकते,इसी प्रकार हम अच्छी विशेषताओं की कैफियत भी नहीं जान सकते,परन्तु हम उस पर ईमान लाते हैं और बिना,किसी रद्दो बदल,तातील(अर्थात अल्लाह तआला को उस के नामों और विशेषताओं से खाली मानना) औ तकयीफ के(अल्लाह तआला की विशेषता की हिकायत बयान करना जैसे यह कहना कि अल्लाह तआला का हाथ इस प्रकार है) और बिना तमसील के(अल्लाह तआला की विशेषताओं की मिसाल बयान करना)।

4-अल्लाह तआला के नाम और उस की विशेषताओं के हक़ीक़ी अर्थ हैं,न कि अवास्तविक

https://www.with-allah.com/hi

मजाज़ी,और न ही रहस्यपूर्ण,और यह अल्लाह तआल की ज़ात पर और उस की पूर्णता की विशेषताओं पर प्रमाणित हैं जो उस के साथ क़ायम हैं,जैसे शक्तिमान,जानकार,हिक्मत वाला,सुनने वाला और देखने वाला,तो निःसंदेह यह सब नाम अल्लाह तआला की ज़ात और उस की शक्ति,ज्ञान,हिक्मत,सुनने और देखने पर दलालत करते हैं।

5- अल्लाह तआला को ख़ामियों से पविन्न मानना ये बिना तातील के उस की पविन्नता बयान करना हुआ,और अल्लाह ताअला की ज़ात से कमियों का इन्कार संक्षेप प्रकार से करना है और हर एक विशेषता की पूर्णता को विस्तार से साबित करना है,अल्लाह तआला ने कहाः {उस जैसी कोई चीज़ नहीं,और वह सुनने वाला देखने वाला है"।}[अश्शूराः 11].

6- अल्लाह तआला के नामों पर ईमानः

जिस प्रकार नाम और उस सिफत पर ईमान जिस को नाम शामिल है तक़ाज़ा करता है ठीक उसी प्रकार उस प्रभाव पर ईमान जिस का तअल्लुक़ नाम से है भी तक़ाज़ा करता है,अर्थात अल्लाह तआला का अर्रहीम नाम अल्लाह तआला की दया वाली विशेषता को शामिल है,तो अल्लाह तआला अपनी दया के ज़रिये अपने बंदों पर मेहरबानी करता है।

और यहाँ पर कुछ महत्वपूर्ण चेतावनियाँ हैं जो अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के समझने में सहायक हैं,और वह निम्न लिखित हैंः

1- अल्लाह तआला के नाम किसी निश्चित सीमा तक ही सीमित नहीं हैं,हदीस में हैः «मैं तुझ से तेर हर उस नाम के ज़रिये सवाल करता हूँ जिसे तूने अपना नाम बनाया या अपने मखलूक़ में से किसी को सिखाया या उसे तू ने अपनी किताब में उतारा या अपने इल्मे गैब में इसे अपने लिये खास कर लिया..» (अहमद).

2- अल्लाह तआला के नामों में से कुछ नाम ऐसे हैं जो केवल अल्लाह के साथ खास हैं,उस में कोई और अल्लाह का साझी नहीं है,और अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी और को ये नाम नहीं दिये जा सकते जैसे,अल्लाह,अर्रहमान,और कुछ ऐसे हैं जो दूसरों के नाम रख सकते हैं,अगरचे अल्लाह तआला के नाम और उस की विशेषतायें अधिकतर पूर्ण और मुकम्मल हैं.

3- अल्लाह तआला के नामों से विशेषतआयें ली जाती हैं,हर नाम में विशेषता पाई जाती है,परन्तु विशेषता से नाम नहीं निकलता,जैसे हम कहें कि अल्लाह को क्रोध आता है लेकिन हम ये नहीं कह सकते कि अल्लाह तआला अलगज़ूब (क्रोध वाला) है,अल्लाह तआला इस से पाक है.

https://www.with-allah.com/hi